ISSN No. : 2394-0344 **REMARKING :** VOL-1 * ISSUE-5*October-2014

महात्मा गाँधी और अछूतोद्धार

Dear Author,
Please provide **ABSTRACT**, **KEY WORDS and REFERENCES must be in MLA pattern**, for this paper with the proof urgently otherwise your paper may be transfer for next issues untill above are recieved.

अभिलाषा
व्याख्याता इतिहास
राजकीय
लोहिया महाविधालय
चुरू

सारांश

मुख्य शब्द : Please Add Some Keywords.

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में 19वीं–20वीं शताब्दी राजनीतिक घटनाक्रम के साथ–साथ सामाजिक नवजागरण का काल भी रहा। इस समय भारतीय समाज अनेक कुरीतियों उदाहरणार्थ– जातिप्रथा,अस्पृश्यता,सती प्रथा,पर्दा प्रथा आदि से ग्रसित हो चुका था। अस्पृश्यता शताब्दियों से भारतीय समाज व्यवस्था का अंग रही है जो हिन्दू समाज के उत्थान के मार्ग में सबसे बडी बाधा है। उन्नीसवीं शताब्दी में बौद्धिक चेतना,पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति के प्रभाव के कारण भारत में बुद्धिजीवी एवं जागरूक वर्ग का विकास हुआ,जिसके फलस्वरूप समाज सुधार आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार हुई। अनेक बुद्धिजीवियों ने समाज में लगे अस्पृश्यता के कोढ़ को पहचाना। उन्नीसवीं सदी में ऐसे कई सामाजिक–सांस्कृतिक आंदोलन हुए जिनका उद्देश्य भारतीय सांस्कृतिक और पारम्परिक संस्थाओं में सुधार करना तथा उनको नवजीवन प्रदान करना था। महाराष्ट्र में ज्योतिबा फुले ने जाति भेदभाव और छुआछूत जैसी अमानवीय व्यवहार की जड़ों पर प्रहार किया। दक्षिण भारत में जस्टिस पार्टी,ई.वी रामास्वामी नायकर के नेतृत्त्व में आत्मसम्मान आंदोलन इत्यादि ने छुआछूत उन्मूलन की दिशा में कदम उठाए। अपने ही सहधर्मियों को अछूत घोषित करके उन्हें मनुष्यता से वंचित रखने वाली अस्पृश्यता को समूल नष्ट करने का संकल्प अपने आप में एक क्रांति थीं ब्रहा समाज तथा आर्य समाज ने भी अस्पृश्यता की भावना की आधारशिला को अमान्य ठहराया और सामाजिक समानता का प्रतिपादन किया। लेकिन ये जनसाधारण को उद्वेलित कर सकने में अक्षम रहे।[1]

महात्मा गाँधी एक राजनीतिक चिंतक होने के साथ–साथ समाज सुधारक भी थे। अपनी आदर्श सामाजिक व्यवस्था की प्राप्ति के लिए गाँधीजी उन समस्त व्याधियों का उन्मूलन करना चाहते थे,जिनसे हिन्दू समाज बुरी तरह ग्रसित था। ऐसी कोई सामाजिक समस्या नहीं थी जिसकी तरफ गाँधीजी का ध्यान न गया हो चाहे अस्पृश्यता हो,बाल विवाह हो, या शराबखोरी।उन्होंने अस्पृश्यता निवारण को स्वराज्य प्राप्ति हेतु अपने रचनात्मक कार्यक्रमों का अभिन्न हिस्सा बनाया।[2]

भारत में छुआछूत दो प्रकार की थी– प्रथम,श्वेत और द्वितीय,भारतीय समाज में प्रचलित भारतीय दरिद्रों के प्रति जो और खतरनाक थी। इस प्रश्न पर गाँधीजी का ध्यान गया।[3] गाँधीजी के अनुसार अस्पृश्यता एक नृशंस तथा अमानवीय व्यवहार है।

गाँधीजी के पहले अछूतोद्धार क्षेत्रीय स्तर पर पनप रहा था। बीसवीं शताब्दी में गांधी और अम्बेडकर के प्रखर नेतृत्त्व में अछूतोद्धार आन्दोलन ने राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण किया।[4]

वर्तमान युग के लिए यह कम गौरव की बात नहीं थी कि इस युग में अनेक महापुरूषों ने जाति प्रथा एवम् अस्पृश्यता के अभिशाप को निरस्त करने का जी तोड़ प्रयास किया,ऐसे महापुरूषों में मोहनदास करमचंद गांधी का नाम सर्वोपरि है–कारण,उन्होंने हिन्दुओं की आत्मा को,उनकी मानसिकता को अस्पृश्यता की अमानवीय एवं आपराधिक प्रवृत्ति से मुक्त करने का प्रयास किया। क्योंकि गांधीजी ने यह समझा कि अस्पृश्यता की जड़ हिन्दुओं की

चेतना में थी और अस्पृश्यता को हटाने का एकमात्र प्रशस्त पथ यह था कि हिन्दुओं की मानसिकता को शुद्ध किया जाए और उन्हें सत्य,अहिंसा एवं सामाजिक न्याय के पथ पर चलने की प्रेरणा दी जाए। सामाजिक न्याय की गांधी की संकल्पना में अस्पृश्यता का सर्वाधिक महत्त्व है।[5]

भारत में गांधीजी ने अस्पृश्यता निवारण तथा अछूतोद्धार को स्वराज की मांग से जोड़ा।[6] उनकी दृढ़ मान्यता थी कि,अस्पृश्यता का उन्मूलन किए बिना स्वराज की प्राप्ति असंभव भी है और निरथर्क भी।[7] भारतीय जनसंख्या का पाँचवा भाग यदि इस पराधीनता में जीवित रहेगा तो हमारा स्वराज ही बेकार है। मनुष्य–मनुष्य के मध्य बंधुता कायम रहे इसलिए बापू ने व्यक्तिगत,सामाजिक,धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्रों में छुआछूत मिटाने का व्याकरण चलाया।

गांधीजी स्वभाव से संवदेनशील थे और बारह वर्ष की छोटी आयु में ही उनको अस्पृश्यता की समस्या का बोध हो चुका था। उनकी माँ उन्हें घर में सफाई करने वाले मेहतर तथा स्कूल में अस्पृश्य जाति के सहपाहठियों को छुने से मना करती थी।[8] लेकिन बालक मोहनदास में बचपन से यह जानने की उत्सुकता थी कि कुछ लोगों को अस्पृश्य क्यों माना जाता है? अस्पृश्यता के अविवेक के प्रति गांधी की चेतना उनके बालपन से ही जागरूक थी और अहिंसा के बीज उनकी मूल चेतना में समाए हुए थे।[9] अस्पृश्यता और तिरस्कार से बचने के लिए गांधीजी ने कहा था–

अन्याय और अनीति स्वयं नहीं करनी और जहां दिखे वहां उसका प्रतिकार करना,अन्याय करना व सहना अधर्म है।''[10]

स्वयं गांधीजी को भेदभाव की नीति का सामना करना पड़ा था यद्यपि उनके संदर्भ में इसका कारण नस्ल की श्रेष्ठता की अवधारणा में विद्यमान था। दक्षिण अफ्रीका के प्रवास के दौरान गांधीजी ने भारतीयों के साथ जो कुछ होते देखा और भुगता वह अस्पृश्यता का ही एक रूप था। उन्होंने अस्पृश्यता की खुली निंदा दक्षिण अफ्रीका में शुरू की।[11] इस कानून सम्मत अन्याय से लड़ने के दौरान गांधीजी ने संघर्ष का एक मौलिक अस्त्र खोजा सत्याग्रह। महात्मा गांधी ने अस्पृश्यता निवारण और अछूतोद्धार हेतु रचनात्मक कार्य किए और इन्हें अन्य कार्यो की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया। गांधीजी ने देश को सचेत किया कि अस्पृश्यता से समग्र हिन्दू राष्ट्र नष्ट हो जाएगा। अछूतों के उद्धार के लिए गांधीजी ने जिस नीति का अनुसरण किया वह राजनीतिक या कानूनी नहीं थी बल्कि वह उनकी आध्यात्मिक उच्चता,सदाशयता और उपनिषदों को दूर करने के लिए भारी तपश्चर्या करें। बापू ने जात–पात को इस देश का दुर्भाग्य माना। वे किसी भी पेशे को ऊँचा या नीचा नहीं मानते थे और मानव मात्र को समान दृष्टि से देखते थे।[12]वे अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए हिन्दू समाज के सक्रिय सहयोग पर जोर देते थे। उन्होंने हिन्दू समाज की मूलभूत एकता बनाए रखने के लिए अस्पृश्यों को अपना धर्म न छोड़ने की सलाह दी लेकिन अम्बेडकर धर्मांतरण के पक्षधर थे। गांधी और अम्बेडकर के सामाजिक लक्ष्य समान होते हुए भी दोनों एक ही पथ के पथिक नहीं थे। गांधीजी ने अछूतोद्धार हेतु सनातनियों का सहयोग लेना चाहा लेकिन अम्बेडकर सनातनियों के सहमत होने तक प्रतीक्षा करने को तैयार नहीं थे।गांधी अस्पृश्यता के प्रश्न पर एक साथ दो मोर्चो पर सक्रिय रहे।

प्रथम मोर्चा वे सवर्णो में अस्पृश्यता बरतने के लिए एक प्रकार का अपराध बोध जगा रहे थे।,द्वितीय मोर्चों अस्पृश्यों के मध्य था,वे अछूतों को अपने परम्परागत सोच और जीवनशैली में बदलाव की जरूरत समझा रहे थे।वे उनमें अशिक्षा,अंधविश्वास,शराबखोरी,कुत्सित रूढियों और उनमें व्याप्त आपसी अस्पृश्यता को समाप्त करने पर जोर दे रहे थे।[13]अछूतोद्धार का अभूतपूर्व आंदोलन गांधीजी के नेतृत्त्व में तीन समानांतर परिप्रेक्ष्यों में चला। प्रथम परिप्रेक्ष्य प्रतीकात्मक था जिसके अंतर्गत मंदिर प्रवेश सत्याग्रह,अछूतों को हरिजन नाम देना,हरिजन यात्रा का आयोजन आदि।

द्वितीय परिप्रेक्ष्य सामाजिक था जिसमे अछूतों के लिए शिक्षा का प्रचार–प्रसार,हरिजन सेवक संघ स्थापना,कुओं,तालाबों एवं सड़कों को अछूतों के लिए खोलने का प्रयास किया गया। तृतीय परिप्रेक्ष्य राजनीतिक एवं कानूनी था। इसके अंतर्गत दलित जातियों के कानूनी अधिकारों के लिए संघर्ष किया।गांधीजी ने अछूतों को मंदिर में प्रवेश न दिए जाने का घोर विरोध किया और एक ऐसा प्रतीक कर्म चुना जिसका जनसामान्य पर गहरा प्रभाव पड़ा।[14]

केरल के गुरूवायूर मंदिर के द्वार अछूतों के लिए खोले जाने के लिए उन्होंने अनिश्चितकालीन अनशन किया। अस्पृश्यता निवारण के लिए गांधीजी ने अछूतों के मंदिर प्रवेश को सबसे अधिक महत्त्व दिया। उनका विश्वास था कि अछूतों में आत्मसम्मान के भाव उत्पन्न करने और सवर्ण हिन्दुओं के दृष्टिकोण को बदलने का इससे अच्छा ओर कोई उपाय नहीं हो सकता।[15] यद्यपि गांधीजी स्वयं मंदिर जाने में विशेष उत्साह नहीं रखते थे परन्तु वे इस तथ्य को स्वीकार करते थे कि सामान्य,जनता के जीवन में मंदिरों की विशेष भूमिका है।

गांधीजी द्वारा त्रावणकोर में वाइकोम सत्याग्रह चलाया जाना अछूतोद्धार की दृष्टि से भारतीय इतिहास की एक युगांतकारी घटना है।[16]मंदिर प्रवेश को वे अस्पृश्यों की सामाजिक और आर्थिक उत्थान की कुंजी मानते थे।

अम्बेडकर भी नासिक के कालाराम मंदिर सत्याग्रह में दलितों के राजनीतिक अधिकारों को अधिक महत्त्व दिया गया।[17]गांधीजीके मत में अस्पृश्यों की आर्थिक समस्या का हल तब तक संभव नही था,जब तक अन्य लोगों के साथ बराबरी के आधार पर अस्पृश्यों को मंदिर प्रवेश का अधिकार नहीं मिल जाता है।[18]

उनके अनुसार साधारण मंदिरों और आम मदरसों का उपयोग करने की स्वतंत्रता के साथ ही अछूतों के लिए खासतौर पर नमूनेदार मंदिर और मदरसे बनाए जाने चाहिए।[19] गांधीजी की प्रेरणा से मदनमोहन मालवीय के सभापतित्व में जनवरी 1933 में अखिल भारतीय सनातन धर्म सभा का सम्मेलन हुआ,उसमें अस्पृश्यता समाप्त करने का प्रस्ताव पारित करते हुए कहा गया कि यदि अछूत सफाई से रहते है और प्रतिदिन स्नान करते है तो उन्हे भी मंदिर प्रवेश का वही अधिकार है जो शेष हिन्दुओं को।[20]

गांधीजी ने युगों–युगों से चली आ रही अस्पृश्यता की भावना के निवारण के लिए अछूतों को हरिजन की संज्ञा दी,जिसका शाब्दिक अर्थ है हरि का जन अर्थात् ईश्वर का व्यक्ति।

हरिजन शब्द का प्रयोग सम्पूर्ण हिन्दू समाज में लोकप्रिय हो गया। गांधीजी ने 7 नवम्बर 1933 को वर्धा से 2 अगस्त 1934 तक 10 महीनों में 12500 मील की अस्पृश्यता विरोधी हरिजन यात्रा की।

हरिजन यात्रा के अन्तर्गत छुआछूत उन्मूलन हेतु व्यापक प्रचार–प्रसार किया गया,भाषण दिए गए तथा हरिजन कल्याण के लिए करीब 8 लाख कोष एकत्रित किया गया।[21] गांधीजी ने इस कोष का उपयोग हरिजनों के आर्थिक जीवन में सुधार के लिए किया। उनके लिए तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था की तथा उनके रहन–सहन के जीवन में सुधार के लिए सजीव प्रयत्न किए।

गांधीजी ने अपनी हरिजन यात्रा के दौरान ऐसा वातावरण तैयार किया जिसमें हरिजनों के उद्धार के कार्य को आगे बढाया जा सके।[22]

गांधीजी ने संदेश दिया कि जब तक हम अछूतों को गले नहीं लगायेंगे हम मनुष्य नहीं कहला सकते। अस्पृश्यता निवारण हेतु विविध प्रकार की गतिविधियाँ हुई– 27 सितम्बर से 2 अक्टूबर अस्पृश्यता उन्मूलन सप्ताह मनाया गया,एक अखिल भारतीय अस्पृश्यता संघ की भी स्थापना की गई।[23]गांधीजी के अनुसार छुआछूत एक कलंक है और इस कलंक को हटाए बिना हमारा सामाजिक उत्थान नहीं हो सकता। हरिजनों के उद्धार के कार्य को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से गांधीजी ने हरिजन नामक समाचार–पत्र निकाला तथा हरिजन सेवक संघ की स्थापना की।[24]हरिजन सेवक संघ का लक्ष्य सत्यपरक और अहिंसात्मक उपायों द्वारा हरिजनों को सवर्ण जातियों के साथ पूर्ण समानता प्रदान करना था। गांधीजी के अनुसार मनुष्य बस मनुष्य हैं। संघ ने अछूतों के मंदिर प्रवेश के लिए तथा सार्वजनिक महत्त्व के सभी स्थलों–कुओं,घाटों,धर्मशालाओं आदि को उनके लिए खोल देने के लिए कार्य किया। यद्यपि संघ का मुख्य कार्य हरिजनों को सार्वजनिक स्कूलों एवं कुओं के उपयोग का अधिकार दिलाना था,इसने उनके लिए अलग कुएँ खुदवाएँ और स्कूल खुलवाएँ। हरिजन वर्ग की ग्रामों में मजदूरी छुड़वाने संबंधी प्रयास किए गए,उनके लिए गांधीजी का आग्रह था कि हरिजनों को स्वयं भी स्वतंत्र व्यवसायों को अपनाने में हिचकिचाहट नहीं दिखलानी चाहिए। गांधीजी ने नगरपालिकाओं को भी दायित्व वहन करने के लिए प्रेरित किया। उदाहरणार्थ उन्होंने चाहा कि मैला ढोने के परम्परावादी ढंग को बदलना चाहिए।

सिर से मैला ढोने के स्थान पर छोटी–छोटी गाड़ियों से मैला ढोने की सुविधा दी जाए,पाखानों में धातु निर्मित,मिट्टी के बर्तन रखे जाएं जिससे गंदगी कम से कम हों हरिजन सेवक संघ ने हरिजनों का आर्थिक,सामाजिक और धार्मिक दर्जा बढ़ाया आवश्यकतानुसार कुएँ खुदवाएँ एवं पाठशालाएँ स्थापित करवाई तथा अन्य सामाजिक सुविधाएँ दी।[25] सितम्बर 1932 में गांधीजी द्वारा किया बहुचर्चित आमरण अनशन हरिजन आन्दोलन की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना हैं।

अगस्त 1932 में ब्रिटिश सरकार द्वारा मैकडोनाल्ड अवार्ड के अंतर्गत अछूतों के लिए पृथक निर्वाचन मंडल और उनके लिए निश्चित स्थानों की व्यवस्था रखी गई। यह हिन्दू समाज को विभाजित करने की ब्रिटिश चाल थी। इसके विरोध में गांधीजी ने आमरण अनशन का साहसिक निर्णय लिया।

इस अवसर पर गांधीजी ने अपने साक्षात्कार में कहा कि जिसके लिए मैं जी रहा हूँ और जिसके लिए मुझे मृत्यु का वरण करने में भी हर्ष होगा वह है अस्पृश्यता की आमूलचूल समाप्ति। गांधीजी के इस आमरण अनशन का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा।

उससे यहां एक ओर सरकार पर दबाव तो बना ही हिन्दू समाज पर इसका विलक्षण प्रभाव पड़ा तथा लगभग सभी स्थानों पर लोगों ने सार्वजनिक सभाओं में अस्पृश्यता के अंत की प्रतिज्ञा की।[26] पूना पैक्ट के तहत दलितों के हिन्दू समाज का अभिन्न अंग माना गया। प्रान्तीय विधायिकाओं में निम्न जातियों क लिए आरक्षित सीटों की संख्या बढाकर दुगुनी कर दी गई।

गांधीजी का तर्क था कि पृथक् निर्वाचक मण्डल तथा विशेष प्रतिनिधित्त्व देने से कतिपय अछूत राजनीतिज्ञों को भले ही लाभ हो,परन्तु इससे अस्पृश्यता अपने में एक न्यस्त स्वार्थ बन जाएगी। जबकि अम्बेडकर दलितों के पृथक राजनैतिक अस्तित्व की रक्षा हेतु पृथक् निर्वाचन प्रणाली के पक्षधर थे। अम्बेडकर दलितों के लिए धार्मिक–सांस्कृतिक प्रश्नों के बजाय राजनीतिक शक्ति को अधिक प्राथमिकता देते थे।[27]

गांधीजी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता के समान अस्पृश्यता निवारण भी स्वराज्य के लिए आवश्यक माना। 28 सन् 1940 तक गांधीजी अछूतोद्धार के कार्य में लगे रहे और इसके लिए उन्होने सात बार अनशन किया। कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में अस्पृश्यता निवारण प्रस्ताव भी पारित करवाया तथा कांग्रेस के हिन्दू सदस्यों को अस्पृश्यता मिटाने का भार अपने ऊपर लेने को कहा।[29] 1924 के बेलगांव अधिवेशन में गांधीजी ने अस्पृश्यता को विषय बनाया। हरिजनोद्धार और उनके समानाधिकार के बापू हामी थे।

गांधीजी के मत में अस्पृश्यता का वर्तमान स्वरूप ईश्वर और मनुष्य के खिलाफ किया गया भयंकर अपराध है। वे चाहते थे यदि उनका पुनर्जन्म हो तो एक अछूत के घर में हो जिससे ये उसकी परेशानियों एवं दुःखों में सहभागी बन सके।[30]गांधीजी ने सवर्ण हिन्दुओं और अछूतों के मध्य विवाह संबंध और गोद लेने के संबंध स्थापित किए।

गांधीजी के अछूतोद्धार आन्दोलन के प्रमुख पक्ष– प्रथम,मानव जीवन की आधारभूत एकता में विश्वास जिसे वे बिना वर्ग संघर्ष के मूर्त रूप देना चाहते थे। अस्पृश्यता की समस्या का गांधीजी के द्वारा प्रस्तुत निदान धर्म परिर्वतनों से अथवा सरकार की नीति से उद्भूत निदानों से सर्वदा भिन्न था। वे छूआछूत का उन्मूलन समाज में व्यापक जागरूकता उत्पन्न कर करना चाहते थे। द्वितीय,गांधीजी के अछूतोद्धार आन्दोलन ने राष्ट्र के राजनीतिक आन्दोलन में विघटनकारी प्रवृतियों के अंकुरित होने पर रोक लगाई।

यर्वदा समझौते से राष्ट्रीय जीवन की एक दरार पर समय पर पाट दी गई।[31]तृतीय गांधी के चिंतन में समाज परिवर्तन का प्रेरणा स्रोत व्यक्ति की अंतरात्मा थी। उनका विश्वास था कि व्यक्ति की अंतरात्मा को जगाकर,आवश्यक होने पर उसे टोंचकर भी सामाजिक परिर्वतन के लिए अनुकुल परिवेश बनाया जा सकता है। ऊपर से थोपा गया सुधार न तो खरा होता है और न अधिक समय तक टिक ही पाता है। इसलिए वे राजशक्ति के माध्यम में भी गांधीजी का सारा जोर इसी पर था।

गांधीजी ने अछूतोद्धार को एक सामाजिक–नैतिक सुधार आन्दोलन के रूप में लिया। उनके अनुसार कोई काम न छोटा है और न बड़ा। वे बार–बार श्रम प्रतिष्ठा पर बल देते थे। उन्होंने मल–मूत्र साफ करने का कार्य किया। जबकि अम्बेडकर प्रतीकात्मकता के बजाय अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए ठोस संस्थागत और स्थाई आधार तैयार करना चाहते थे। इसलिए उनका जोर शिक्षा,नौकरियों और राजनीतिक अधिकारों पर था।गांधीजी का मानना था कि अछूतोद्धार धार्मिक और सामाजिक प्रश्न है।[32]

निष्कर्षतः गांधीजी के अछूतोद्धार आन्दोलन का तत्कालीन भारतीय परिवेश में एक विशिष्ट महत्त्व था। वे हिन्दु समाज के सभी घटकों को अपने साथ लेने में सफल रहे तथा राष्ट्र के सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन में विघटनकारी प्रवृतियों का प्रवेश रोका उन्होंने भावनात्मक स्तर पर जनसामान्य में अस्पृश्यता की अन्यायपूर्ण परिपाटी के विरोध में व्यापक चेतना उत्पन्न की और इसके निवारणार्थ उपयुक्त वातावरण तैयार किया। ,,

गांधीजी जन्मना अस्पृश्य तो नहीं थे,परन्तु अस्पृश्यों की मानसिकता और उनकी समस्याओं को समझने के अपने प्रयासो में वे कई अस्पृश्य नेतओं से भी काफी आगे बढ़ गए। हरिजन सेवक संघ की गतिविधियों के माध्यम से उन्होंने हरिजनों की भौतिक अवस्था में सुधार लाने का प्रयास किया। उनका सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान सवर्ण हिन्दुओं में तथा हरिजनों में इस भावना को जन्म देना था कि समाज के इस रोग को दूर करने में उन दोनों को ही भूमिका निभानी है।

गांधीजी मूलतः एक ऐसे समाज सुधारक थे जो हिन्दू समाज की पुरातनकाल से चली आ रही एकता को विनष्ट किए बिना इसमें सुधार चाहते थे और इसमें वे काफी सीमा तक सफल भी हुए।[33] गांधीजी की अन्य सफलताओं को यदि एक ओर रख दे तो भी केवल उनका अछूतोद्धार कार्यक्रम ही उन्हें दुनिया के अवतारों में स्थान दिलाने के लिए पर्याप्त है।

गांधीजी और अम्बेडकर के प्रयासों के फलस्वरूप ही भारतीय संविधान में किसी भी रूप में अस्पृश्यता के पालन को एक अपराध घोषित किया गया। दलित वर्ग के लोगों के लिए केन्द्रीय तथा राज्य विधानसभाओं में एवम् सरकारी सेवाओं में स्थान आरक्षित किए गए। ये सब ठीक दिशा में ठीक प्रयत्न है। छुआछूत व जाति प्रथा समाप्त हो रही है। और दलित वर्ग भारतीय राजनीतिक जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। लेकिन आजादी के 67 वर्ष बाद आज भी भारतीय समाज से छुआछूत का पूर्णरूपेण उच्छेदन नहीं हुआ है अभी दिशा में बहुत कुछ किया जाना शेष है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अछूतोद्धार के संदर्भ में बापू के विचार बड़े महत्त्वपूर्ण और व्यापक है तथा बड़े पैमाने पर अपनाने होंगे ताकि सारा देश और समाज प्रगति की राह पर आगे बढ़ सके,उसका कोई भाग पीछे न रह जाए।

सन्दर्भ सूची

1. ग्रोवर,बी.एल,यशपाल,"आधुनिकभारत का इतिहास",एस, चंद एण्ड कम्पनी लि,नई दिल्ली,2004.पृ.286–287.
2. शर्मा,प्रो.बी.एम,शर्मा,रामकृष्णदत,"गांधी दर्शन के विविध आयाम'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थअकादमी,जयपुर, 2007 पृष्ठ 39.
3. प्रभुआर.के,राव,यु.आर.''महात्मा गांधी के विचार''नेशनल बुक ट्रस्ट,दिल्ली,1994.पृष्ठ 99.
4. जैन,प्रतिभा,"गांधीचिन्तनःऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य",राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर.1984.पृष्ठ 69–72
5. गुप्ता,द्वारका प्रसाद,महात्मा गांधी और अस्पृश्यता समस्या एवं विकल्प'' ज्ञान भारती,दिल्ली,पृष्ठ 1–2
6. मंत्री,गणेश,गांधी और अम्बेडकर'' प्रभात प्रकाशन,दिल्ली,पृष्ठ 103.
7. चतुर्वेदी,डॉ.मधुकर श्याम,''प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक'' कॉलेज बुक हाउस,जयपुर,पृष्ठ 339.
8. जैन,प्रतिभा,गांधी चिन्तन : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य '' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर,1984,पृष्ठ 72–73
9. गुप्ता,द्वारका प्रसाद,महात्मा गांधी और अस्पृश्यता समस्या एवं विकल्प'' ज्ञान भारती,दिल्ली,पृष्ठ 34
10. रत्तू,डॉ.कृष्ण कुमार,''समग्र गांधी दर्शन गांधी चिन्तन और वर्तमान प्रसंग''आविष्कार पब्लिशर्स,जयपुर,पृष्ठ 11
11. मंत्री, गणेश,गांधी और अम्बेडकर'' प्रभात प्रकाशन,दिल्ली,पृष्ठ 96–99.
12. गुप्ता,द्वारका प्रसाद,''महात्मा गांधी और अस्पृश्यता समस्या एवं विकल्प''ज्ञान भारती दिल्ली,पृष्ठ 76
13. मंत्री,गणेश,गांधी और अम्बेडकर '' प्रभात प्रकाशन,दिल्ली,पृष्ठ 208–210,114
14. गुप्ता,द्वारका प्रसाद,महात्मा गांधी और अस्पृश्यता समस्या एवं विकल्प''ज्ञान भारती,दिल्ली.पृष्ठ 100
15. जैन.प्रतिभा,''गांधी चिन्तन '' ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य''राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ,जयपुर,1984,पृष्ठ 72–76
16. शर्मा,प्रो.बी.एम.शर्मा,रामकृष्ण दत्त,गांधी दर्शन के विविध आयाम'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर. 2007,पृष्ठ 42
17. मंत्री,गणेश,गांधी और अम्बेडकर'' प्रभात प्रकाशन,दिल्ली,पृष्ठ 206
18. कौर,डॉ.सुरजीत,गांधी एक अध्ययन'' कन्सैप्ट पब्लिशिंग कम्पनी,नई दिल्ली,2007,पृष्ठ 309
19. शर्मा,डॉ.वीरेन्द्र,''भारत के पुनर्निर्माण में गांधीजी का योगदान''श्री पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली,1984,पृष्ठ 92–93
20. अग्रवाल,सुरेन्द्र प्रसाद,महात्मा गांधी'' विचार वीथिका'' कन्सैप्ट पब्लिशिंग कम्पनी,नई दिल्ली,पृष्ठ 42.
21. मंत्री,गणेश,गांधी और अम्बेडकर'' प्रभात प्रकाशन,दिल्ली,पृष्ठ 222.

22. डॉ.पूरमल,''दलित संघर्ष और सामाजिक न्याय'',आविष्कार पब्लिशर्स,जयपुर,2002 पृष्ठ 87
23. जैन प्रतिभा,गांधी चिन्तन '' ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984,पृष्ठ 72–80
24. Pruthi,Dr.P.K:Chaturvedi,Dr.Archana,Social Philsophy of Mahatma Gandhi" Comman wealth Publishers, New Delhi,2009 Page 319.
25. शर्मा,डॉ.वीरेन्द्र,भारत के पुनर्निर्माण में गांधीजी का योगदान''श्री पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली,1984 पृष्ठ 93
26. शर्मा,प्रो.बी.एम.शर्मा,रामकृष्ण दत्त''गांधी दर्शन के विविध आयाम'' राजस्थान हिन्दी अकादमी,जयपुर 2007 पृष्ठ 43
27. मंत्री,गणेश,गांधी और अम्बेडकर'' प्रभात प्रकाशन,दिल्ली,पृष्ठ 180–185
28. ''महादेव भाई की डायरी''सर्व सेवा संघ प्रकाशन,पृष्ठ 360
29. गांधी,मोहनदास करमचन्द,सत्य के प्रयोग (आत्मकथा)''नवजीवनप्रकाशन मन्दिर,अहमदाबाद,1957 पृष्ठ 452
30. शर्मा,प्रो.बी.एम.शर्मा,डॉ रामकृष्ण दत्त,गांधी दर्शन के विविध आयाम'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ,जयपुर,2007 पृष्ठ 42
31. जैन,प्रतिभा,गांधी चिन्तन'' ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर.1984 पृष्ठ 79–82
32. मंत्री,गणेश,गांधी और अम्बेडकर'' प्रभात प्रकाशन,दिल्ली,पृष्ठ 203,276
33. जैन.प्रतिभा,गांधी चिन्तन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर,1984,पृष्ठ 82–83